आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711
पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 11 अंक : 8 अप्रेल, 2024 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

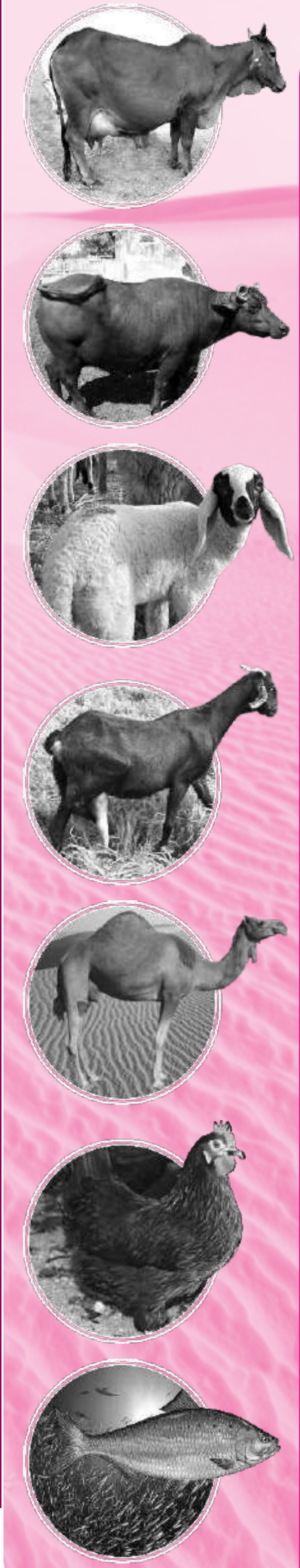

कुलपति सन्देश

पशुओं में प्रतिजैविक औषधियों का व्यापक उपयोग स्वास्थ्य के लिए खतरा : कुलपति

प्रतिजैविक औषधियां ऐसी औषधी है जो जीवाणूओं के संक्रमण को रोकने के लिए सामान्यतः उपयोग में ली जाती हैं। प्रतिजैविक औषधियों का व्यापक उपयोग मानव व पशुचिकित्सा में जीवाणुओं के संक्रमण के उपचार के लिए किया जाता है। इसके अलावा कृषि फसल और पशु उत्पादन उद्योग में भी प्रतिजैविक औषधियों का व्यापक उपयोग किया जा रहा है। प्रतिजैविक औषधियों के अंधाधुंध उपयोग से बीमारियों का उपचार करना मुश्किल हो रहा है तथा प्रतिजैविक औषधियों की प्रभावशीलता भी कम होती जा रही है। इसका प्रमुख कारण प्रतिजैविक औषधियों के प्रति प्रतिरोधकता विकसित होना है। पशुओं की बीमारियों के उपचार के लिए प्रतिजैविक औषधियों का अधिक मात्रा में उपयोग के कारण प्रतिजैविक औषधियों के अवशेष पशु अपशिष्ट द्वारा खेतों, जलाशयों एवं वातावरण में फैल जाते हैं। साथ ही प्रतिजैविक औषधियों के अवशेष दूध, अण्डे व मांस में भी मिल रहे है, जिससे मानव स्वास्थ्य व पर्यावरण को नुकसान हो रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रतिवर्ष 20 लाख से अधिक अमेरिकी लोग एन्टीबायोटिक प्रतिरोधी जीवाणुओं से संक्रमित हो रहे है तथा इनमें से 23,000 की मृत्यु तक हो जाती है। रोगाणुरोधी प्रतिरोध एक प्रमुख स्वास्थ्य चुनौती के रूप में सामने आ रही है। इण्डियन काउसिंल ऑफ मेडिकल रिसर्च, नेशनल सेन्टर फॉर डिसीज कन्ट्रोल व विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार एन्टीबायोटिक प्रतिरोधकता से आने वाले वर्षो में मानव व पशुधन काफी प्रभावित हो सकते है। अतः सभी को मिलकर प्रतिजैविक दवाओं के तर्कसंगत उपयोग के बारे में स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और समाज के बीच जागरूकता उत्पन्न करनी होगी। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने यह भी सुझाव दिया है कि प्रतिजैविक औषधियों का उपयोग चिकित्सक की देखरेख में ही करना चाहिए। पशुपालकों को अपने आप प्रतिजैविक औषधियों का उपयोग नही करना चाहिए तथा प्रतिजैविक औषधियों के विकल्प के रूप में प्राकृतिक औषधीय पौधों का उपयोग करना चाहिए ताकि हम स्वंय को तथा पर्यावरण को बचा सके।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

माननीय राज्यपाल, राजस्थान श्री कलराज मिश्र से कुलपति प्रो. गर्ग की शिष्टाचार भेंट

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

विश्वविद्यालय प्रबंध मण्डल की 34वीं बैठक

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रबंध मण्डल की 34वीं बैठक 15 मार्च को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। प्रबंध मण्डल ने राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में नये कुलपति की नियुक्ति हेतु सर्च समिति के गठन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा एक सदस्य के मनोनयन का अनुमोदन किया गया। बोर्ड द्वारा माननीय न्यायालय के निर्देशानुसार वेटरनरी एनाटॉमी के सहायक आचार्यों के परिणामों का भी अनुमोदन किया गया। इसके साथ ही बोम द्वारा विश्वविद्यालय की गत तीन वित्तीय वर्षों की बैलेंस सीट को भी अप्रूव किया गया। प्रबंध मण्डल द्वारा वित्तीय वर्ष 2024–25 के प्रथम त्रैमास हेतु प्रो. डाटा आधार पर लेखा अनुदान पारित करने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। प्रबंन्ध मण्डल की गत बैठक की पालना रिपोर्ट का अनुमोदन इस बैठक में किया गया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री बी.एल. सर्वा ने बैठक में एजेण्डे प्रस्तुत किये। बैठक में प्रबंध मण्डल के माननीय सदस्य प्रो. ए.के. गहलोत, डॉ. सुचिस्मिता चटर्जी, डॉ. एस.पी. जोशी, प्रो. ए.पी. सिंह एवं प्रो. राजेश कुमार धूड़िया उपस्थित रहे। डॉ. रूद्र प्रताप पाण्डे, प्रो. जगतबीर फोगाट, प्रो. हेमन्त दाधीच एवं श्री ओम प्रकाश ने ऑनलाइन शिरकत की।

पशुओं एवं मुर्गियों में रोग निदान पर पशुचिकित्सकों का प्रशिक्षण

वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के एपेक्स सेंटर द्वारा "पशुओं व मुर्गियों में रोग निदान" विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का 11–13 मार्च तक आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि पशुचिकित्सकों को विभिन्न संक्रामक बीमारियों के रोग निदान का पूर्ण ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। पशुओं में संक्रामक रोग बहुत तेजी से फैलते है। अगर समय पर रोग निदान या डायग्नोसिस हो जाये तो उपयुक्त ईलाज द्वारा संक्रमण को नियंत्रण कर सकते है। रोग संक्रमण के नियंत्रण से ना केवल पशुओं की मृत्यु दर पर नियंत्रण कर सकते है अपितु पशुपालकों को आर्थिक नुकसान से भी बचाया जा सकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच, अतिरिक्त निदेशक डॉ. शुचिस्मिता चटर्जी, प्रभारी अधिकारी एपेक्स सेन्टर डॉ. जे.पी. कच्छावा ने भी सम्बोधित किया। प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगगांनगर एवं हनुमानगढ़ जिले में कार्यरत 24 पशुचिकित्सकों ने भाग लिया। अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह एवं पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. एस.पी. जोशी ने प्रशिक्षण के अंत में सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए।

समाज और पशुपालन के परिपेक्ष्य में पत्रकारिता का महत्व पर संगोष्ठी

वेटरनरी विश्वविद्यालय के सामाजिक विकास एवं सहभागिता प्रकोष्ठ एवं राजस्थान पत्रिका, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "समाज और पशुपालन के परिपेक्ष्य में पत्रकारिता का महत्व" विषय पर 20 मार्च को संगोष्ठी कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि देश की जी.डी.पी. में पशुपालन का बहुत बड़ा योगदान है देश की आजादी के बाद हम खाद्यान एवं पशुउत्पादों में आत्म निर्भर हो गये है लेकिन लघु एवं सीमान्त किसानों एवं पशुपालकों को आज भी पूरा लागत मूल्य नहीं मिल पा रहा है। पत्रकारिता एवं सोशल मीडिया के माध्यम में किसानों एवं पशुपालकों की वस्तुस्थिति, समस्या आदि सरकार के ध्यान में लाकर हम पशुपालन व्यवसाय को और अधिक सुदृढ़ बना सकते है। प्रेस मीड़िया जहां सूचनाओं को जन–जन तक पहुंचाती है वहां समाजिक सरोकार के कार्य करके राष्ट्र उत्थान में सहायक हो सकते है। विशिष्ट अतिथि कमान्डेट (बी.एस.एफ.) डॉ. गोपेश नाग ने कहा कि पशुचिकित्सा दूर–दराज के क्षेत्र में पशुकल्याण के कार्यों में निहित रहते है। उनका कार्य क्षेत्र बहुत व्यापक है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि हरिशंकर आचार्य, उपनिदेशक सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, बीकानेर ने पत्रकारिता के इतिहास पर विस्तृत जानकारी दी एवं पशुचिकित्सा, पशुकल्याण एवं पशु विज्ञान के कार्यों को समाचार पत्रों में विशेष महत्व देने की जरूरत बताई। कार्यक्रम के दौरान दिनेश चन्द्र सक्सेना सेवानिवृत संयुक्त निदेशक, जन सम्पर्क विभाग, बीकानेर एवं चन्द्रशेखर श्रीमाली ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के समन्वयक निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी और समाज, संस्था एवं देश के विकास में जनसम्पर्क मीडिया की बहुत बड़ी भागीदारी बताई। प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच ने सभी को धन्यवाद देते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट प्रबन्धन पर वेटरनरी विद्यार्थियों का प्रशिक्षण

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र, राजुवास, बीकानेर द्वारा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के विभिन्न विभागों में अध्ययनरत स्नातकोत्तर एवं विद्या वाचस्पति छात्र–छात्राओं को पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण 1 मार्च को प्रदान किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. ओम प्रकाश, सह–आचार्य, पैथोलॉजी विभाग, सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज ने जैविक अपशिष्ट के निस्तारण को आज की महत्वपूर्ण अवश्यकता बताया। प्रमुख अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने कहा कि जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित निस्तारण एवं प्रबंधन के प्रति जागरूगता वर्तमान परिपेक्ष्य में अति आवश्यक हो गई है। डॉ. मनोहर सेन एवं डॉ. देवेंद्र चौधरी ने प्रशिक्षणार्थियों को बायोमेडिकल अवशेष के उचित निस्तारण का प्रायोगिक ज्ञान प्रदान किया।

कोडमदेसर में वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर में 4 मार्च को अखिल भारतीय मारवाड़ी बकरी नस्ल सुधार परियोजना के तहत एक दिवसीय उन्नत बकरी पालन प्रशिक्षण आयोजित किया गया। परियोजना की प्रमुख अन्वेषक प्रो. उर्मिला पानू ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में कोडमदेसर, जयमलसर एवं डाईया के 30 बकरी पालकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. विरेन्द्र कुमार परियोजना सह प्रमुख अन्वेषक ने बकरियों में नस्ल सुधार एवं वैज्ञानिक प्रजनन की जानकारी प्रदान की। डॉ. प्रकाश ने बकरियों में टीकाकरण एवं पोषण की जानकारी दी। प्रशिक्षण के समापन पर बकरी पालकों को "फीड–मेंजर" वितरित किये गये।

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण पर जागरूकता कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र, राजुवास की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया कि केन्द्र द्वारा राजकीय माध्यमिक विद्यालय, इंदिरा गांधी नहर परियोजना, बीकानेर में छात्र–छात्राओं हेतु अपशिष्ट निस्तारण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 28 मार्च को किया गया। जागरूकता कार्यक्रम में केन्द्र के सहायक आचार्य डॉ. देवेन्द्र चौधरी एवं डॉ. वैशाली ने छात्र–छात्राओं को पालतू पशुओं से होने वाले रोगों के बारे में विस्तार पूर्वक अवगत करवाया एवं रेबीज से बचाव व टीकाकरण की भी जानकारी दी।

राष्ट्रीय संगोष्ठी पर विश्वविद्यालय प्रदर्शनी का आयोजन

केन्द्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर द्वारा दिनांक 14 मार्च को केन्द्रीय उष्ट्र अनुसंधान बीकानेर परिसर में प्रसार शिक्षा निदेशालय , राजुवास, बीकानेर द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन की वैज्ञानिक तौर–तरीकों को मॉडल, चार्टस, पैनल्स एवं रंगीन चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में पशुपोषण की उन्नत तकनीकों जैसे संतुलित पशु आहार, अजोला उत्पादन, यूरिया मोलासेस मिनरल ब्लॉक बनाने की विधि व मॉडल का सजीव प्रदर्शन भी किया गया। विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी का डॉ. अरूण कुमार तोमर, निदेशक, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान, अविकानगर, डॉ. आर्तबन्धु साहू, निदेशक, केन्द्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्दं, बीकानेर आदि अनेक गणमान्य लोगों द्वारा अवलोकन कर सराहना की। इस अवसर पर प्रो. राजेश कुमार धूड़िया निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर एवं डॉ. सजंय सिह ने विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तहत विभिन्न विभागों की समीक्षा बैठक

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गाँव गाढ़वाला में विभिन्न विभागों द्वारा किए गए कार्यो की समीक्षा हेतु समन्वय समिति की बैठक 13 मार्च को आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा की गई। प्रो. राजेश कुमार धूड़िया निदेशक प्रसार शिक्षा ने कार्य योजना पर बिंदूवार चर्चा की तथा सभी विभागो से उनके द्वारा किए गए विकास कार्यों की समीक्षा की जानकारी ली। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने सभी विभागों के अधिकारियों का स्वागत किया। बैठक में पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. एस.पी. जोशी, आयुर्वेद विभाग के डॉ. नन्द लाल मीणा व डॉ संदीप, नाबार्ड़ के रमेश ताम्बिया, वन विभाग के महावीर रोहिल, जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी के अनिल कुमार जैन व जितेन्द्र सिंह बैस, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के डॉ. राजेश गुप्ता, जिला परिषद् के गोपाल जोशी, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के नन्द किशोर राजपुरोहित और राजुवास की सहायक निदेशक (शोध) डॉ. रेणु कुमारी बैठक में उपस्थित रहे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 11, 14 एवं 23 मार्च को गांव भादासर उतरादा, देपालसर एवं सवाई बड़ी गांवों में तथा 26 एवं 27 मार्च को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 122 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 5 एंव 7 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण दिनांक 6 एवं 12 मार्च को गांव पीपेरन एवं रांयावाली तथा दिनांक 27 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 170 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 14 एवं 16 मार्च को गांव सिरसई एवं मांझी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 34 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 2, 6, 16, 26, 27 एवं 28 मार्च को गांव बदरीका, रंजीतपुरा, भोलपुरा, डोडेकापुरा, भुरा का पुरा एवं मुसलपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 165 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 5, 7 एवं 12 मार्च को गांव जामोतरा, जावल एवं सिरोडी . गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 95 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 1, 6, 11, 19, 26 एवं 27 मार्च को गांव कोलार, थूर, जसंवतपुरा, रतपुरा, चंदूर एवं मंडोली गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 102 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर–पाली

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर (पाली) द्वारा 2, 11 एवं 26 मार्च को गांव बगोल, घांटी एवं लम्पी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 48 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौडगढ़) द्वारा 19–20 एवं 27–29 मार्च को केन्द्र परिसर में तीन दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 50 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 4, 5, 6, 7, 11, 13 एवं 15 को गांव जालखेड़ा, खेड़ली, गंदीफली, जनकपुर, करीर का खेड़ा, देवपुरा एवं रंगपुर गांवों में तथा दिनांक 14 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 180 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 4 मार्च को गांव चक 289 आरडी दिनांक 6 एवं 19 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर तथा 12 एवं 28 मार्च केन्द्र परिसर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 161 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 1, 2, 4, 5, 12, 15, 16, 26, 28 एवं 30 मार्च को गांव गुडा, कांकाणी, नन्दवान, मोगड़ा, सांगरिया, आगालाई, माणकलाव, उदयसर एवं थबुकड़ा गांवो में तथा दिनांक 6 एवं 7 मार्च को केन्द्र परिसर में एवं 11, 27 एवं 28 मार्च को ऑनलाईन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 394 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा ...को आनलाईन एक दिवसीय एवं 2, 7, 11, 13 एवं 16 मार्च को गांव मालपुरा, भवानीपुरा, जादमो की ढाणी, पीनणी एवं डीग्गी गांवो में तथा 5, 15 एवं 27 मार्च को ऑनलाईन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 134 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 1, 2, 4, 5, 7, 11, 12 एवं 17 मार्च को गांव नया गांव, मना का देव, अम्बाउ, गढानाथ, नान्दली सागोरा, रायकी, बडलीया रामा ढाणी गांवों में तथा 6 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 218 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 1, 22, 26 एवं 28 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 74 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 7, 11, 23 एवं 26 मार्च को गांव गोविन्दी, लोहराना, चोसला एवं बानगढ़ गांवों में तथा दिनांक 28 एवं 30 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 131 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा 6, 12, 13, 16, 23, 26 एवं 28 मार्च को गांव जोरपुरा सुन्दरियावास, डेहरा, मुण्डियारामसर, बागावास, चैनपुरा, डोडी एवं बारदोडी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 133 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 6 एवं 15 मार्च को गांव करणपुरा एवं फेफाना गांवों में एक दिवसीय तथा केन्द्र परिसर में दो दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में ानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

नवजात पशुओं के लिए खींस (कोलोस्ट्रम) का महत्व

डेयरी व्यवसाय की सफलता में उचित बछड़ा व बछड़ी प्रबंधन एक मुख्य मूल मंत्र है। युवा वंश का उचित पोषण एवं प्रबंधन मृत्युदर को कम कर सकता है। इसमें खींस का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

खींस क्या है–खींस एक गाढ़ा, पीला और स्तन ग्रंथि का प्रथम स्राव है, जो कि प्रजनन के तुरन्त बाद प्राप्त होता है। यह एक सामान्य दूध से भिन्न होता है, क्योंकि दूध की तुलना में 4–5 गुना अधिक प्रोटीन और 10–15 गुना अधिक विटामिन–ए रखता है। यह कई प्रतिरक्षी (एंटीबॉडी) वृद्धि कारकों और आवश्यक पोषक तत्वों के साथ ट्रिप्सिन जैसे अवरोधक कारक भी रखता है। ये अवरोधक कारक खींस में उपस्थित एंटीबॉडी को नवजात पशु की आंत में होने वाले पाचन को रोकते है और एंटीबॉडी को बिना विघटित हुए सीधे ज्यों का त्यों अवशोषित कर लेती है।

खींस क्यों महत्वपूर्ण है!

पशुओं में गर्भावस्था के दौरान अपरा (प्लेसेंटा) के माध्यम से भूर्ण में एंटीबॉडी का स्थानांतरण नहीं होता है। इस कारण नवजात पशु का जन्म सीमित रोग प्रतिरोधक क्षमता के साथ होता है। लेकिन खींस नवजात पशु को निष्क्रिय प्रतिरक्षा तब तक प्रदान करता है जब तक की प्रतिरक्षा प्रणाली विकसित नहीं हो जाती है और संक्रमण या टीकाकरण के प्रतिक्रिया में सक्रीय रूप से एंटीबाडी का उत्पादन करने में सक्षम नहीं हो जाते है। खींस में मुख्यतया आईजीजी, आईजीएम और आईजीए प्रतिरक्षी (एंटीबॉडी) मौजूद होते हैं। आईजीजी, खींस (कोलोस्ट्रम) की सबसे प्रमुख प्रतिरक्षी (एंटीबॉडी), रक्त प्रवाह के साथ–साथ शरीर के विभिन्न भागों में पाए जाने वाले रोगजनकों की पहचान करने और उन्हें नष्ट का कार्य करती है। आईजीएम केवल रक्त में प्रवेश करने वाले जीवाणु की पहचान करती है और उन्हें नष्ट करती है। आईजीए शरीर के विभिन्न अंगों जैसे आंत की आंतरिक सतह की झिल्ली से बंधन करती है एवं रोगकारकों को जड़ने और रोग पैदा करने से रोकती है। खींस से पर्याप्त स्तर के एंटीबाडी प्राप्त करने वाले नवजात पशु में सेप्टीसिमिया, दस्त, सांस संबधित बीमारी और संक्रामक रोगों के कारण होने वाली मृत्यु की संभावना कम हो जाती है। साथ ही खींस में पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, इसलिए यह ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज लवणों का अच्छा स्रोत है।

खींस पिलाने की सफलता को प्रभावित करने वाले मुख्य कारकः

मुख्यतः तीन कारको पर निर्भर करती हैः खींस की गुणवत्ता, खींस की मात्रा, खींस पिलाने का समय खींस की गुणवत्ता मुख्य रूप से एंटीबाडी की सांद्रता पर निर्भर रहती है, जैसे– जैसे समय व्यतीत होता है खींस दूध में बदलने लगता है और एंटीबाडी की सांद्रता भी काम होने लगती है, खींस में एंटीबाडी की सांद्रता, पशु की नस्ल एवं ब्यांत की संख्या पर निर्भर करती है। व्यस्क पशु में एंटीबाडी की सांद्रता, पहली बार ब्याने वाले पशु की तुलना में ज्यादा होती है क्योंकि व्यस्क पशु अपने जीवन काल में कई रोग जनको के सम्पर्क में आया हुआ होता है जिसके प्रति शरीर में प्रतिरोधी का उत्पादन हुआ होता है। प्रायः बूढ़ी गायों में खीस, अधिक मात्रा में एवं अच्छी गुणवत्ता का पाया जाता है। तीन या अधिक ब्यांत वाली गायों में खींस सामान्यता अच्छी गुणवत्ता का होता है। सूखे की अवधि भी खींस की गुणवत्ता को प्रभावित करती है, तीन सप्ताह से कम सूखे अवधि में प्रतिरोधी स्तन ग्रंथि में इकट्ठा नहीं हो पाता है। इसलिये सूखी अवधि लंबी (3 सप्ताह से अधिक) होने पर बेहतर खींस प्राप्त होता है। टीकाकरण–रोटा वायरस, ई. कोली तथा बी.वी.डी. से टीकाकृत गायों के खींस में प्रतिरोधी अधिक पाया जाता है।

नस्ल : प्रायः अधिक दूध देने वाली गायों में खींस की गुणवत्ता अच्छी नहीं होती है। देशी गायों में संकर या विदेशी गायों की तुलना में बेहतर खींस पाया गया है।

खींस को कितनी मात्रा में एवं कब पिलायें!

जन्म के पहले 6 घंटों में लगभग 2.5–3 लीटर या बछड़े के भार के 10 प्रतिशत के बराबर खींस पिलाना चाहिए। जन्म के बाद पहले घंटे के भीतर जितना जल्दी हो सके बछड़े को खींस पिला देना चाहिए। क्योंकि नवजात बछड़े की आंतों में उसके जन्म के 24 घंटों तक प्रोटीन के बड़े अणुओं को अवशोषित करने की क्षमता रहती है। यदि बछड़ा/ बछड़ी जन्म के 2–3 घंटों के भीतर सक्रीय नर्सिंग नहीं कर पाता है तो बोतल या ट्यूब की सहायता से खींस के सर्वोत्तम स्रोत के साथ पूरक देने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।

खींस की गुणवत्ता की जांच कैसे करें: अच्छी गुणवत्ता के खींस में न्यूनतम 50 ग्रा. एंटीबाडी (इम्युनोग्लोबुलिन) प्रति लीटर पाया जाता है। इसका गुणात्मक अनुमान कोलोस्ट्रोमीटर नामक यंत्र द्वारा किया जाता है।

खींस का भंडारण

- ❖ अच्छी गुणवत्ता के खीस को ही भंडारित करना चाहिए।
- ❖ खीस को प्लास्टिक के बर्तन में 4 डिग्री सेल्सियस पर फ्रीज में एक सप्ताह तक भंडारित भी कर सकते है तथा डीप फ्रीज में करीबन एक साल तक भंडारित किया जा सकता है।
- ❖ इस बात का ध्यान रखा जाए कि भंडारित खींस को पिघलाते समय 50 डिग्री सेंटीग्रेड से ज्यादा तापमान न हो, अन्यथा एंटीबाडी (इम्युनोग्लोबुलिन) नष्ट हो सकते हैं। तथा धीरे–धीरे पिघलाए।
- ❖ अलग अलग पशुओं के खींस को एक साथ भंडारित नहीं करना चाहिए।

कृत्रिम खीसः कभी–कभी ऐसा भी होता है कि किसी कारणवश माँ, बच्चे ब्याने के पश्चात खींस देती ही नहीं है या गाय की मृत्यु हो जाती है। ऐसी परिस्थिति में अगर कोई और गाय आसपास में ब्याई हो तो उसका खींस पिलाया जा सकता है। अन्यथा बच्चे को कृत्रिम खींस घर पर बनाकर पिलाना चाहिए। कृत्रिम खीस दिन में तीन बार पिलाना चाहिए।

सारांश : खींस अमृत समान है, पशुपालन में नवजात पशु की मृत्यु दर कम करने में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। इस प्रकार बछड़ों का बताई गई खींस प्रबंधन विधि को ध्यान में रखकर किसान भाई न केवल युवा वंश (बछड़ा व बछड़ी) की मृत्युदर को कम कर सकते हैं बल्कि भविष्य में होने वाले आर्थिक नुकसान से बच सकते हैं तथा एक बेहतर उत्पादन वाले डेयरी झुण्ड तैयार कर सकते है।

डॉ. रेणु कुमारी एवं डॉ. संजय सिंह
वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर

पशुओं में अपच की समस्या एवं समाधान

पशुओं द्वारा अधिकतम उत्पादन और शारीरिक वृद्धि के लिए उनके पाचन तंत्र का स्वस्थ रहना अति आवश्यक है। पाचन तंत्र द्वारा पशु का शरीर चारे में से आवश्यक पोषक तत्व जैसे वसा, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, खनिज लवण एवं विटामिन इत्यादि अवशोषित करता है। ये पोषक तत्व पशुओं के सामान्य स्वास्थ्य, दूध उत्पादन, मांसपेशी की वृद्धि एवं प्रजनन के लिए अति आवश्यक हैं। यदि पशु का पाचन तंत्र स्वस्थ है तो उसकी उत्पादन क्षमता भी अधिकतम रहती है। स्वस्थ पशु खाने के प्रति बहुत लगाव रखते हैं और चारा डालते ही खोर की तरफ तेजी से आते हैं। सामान्यतः किसी भी बीमारी में सबसे पहला लक्षण पशु का चारा छोड़ देना होता है। बड़े फार्म पर, जहाँ सैकड़ों की संख्या में पशु रखे जाते हैं, उनमें से बीमार पशुओं को ढूंढ़ने का यह सबसे आसान तरीका है। आमतौर पर पाई जाने वाली पाचन संबंधी मुख्य बीमारियां आफरा सामान्य अम्लीय अपच, क्षारीय अपच, दस्त, बंद पड़ना आदि हैं।

आफराः— जुगाली करने वाले पशुओं जैसे गाय, भैंस, बकरी, ऊंट आदि के रूमन में अधिक मात्रा में गैसों के उत्पादन होने से या गैस निकलने वाले मार्ग में रुकावट आने के कारण रूमन (पशु का सबसे बड़ा पेट) अत्यधिक फूल जाता है जिसै आफरा कहते हैं।

कारणः—

- ❖ रसदार हरा चारा जैसे रिजका, बरसीम आदि अधिक मात्रा में खा लेने पर हो सकता है।
- ❖ गेहूं, मक्का, बाजरा ऐसे अनाज जिसमें स्टाच अधिक मात्रा में हो खा लेने पर हो सकता है।
- ❖ पशुओं के भोजन मे अचानक परिवर्तन कर देने पर हो सकता है।
- ❖ गैस निकालने वाले मार्ग जैसे ग्रसिका में किसी भी प्रकार की रुकावट आ जाने पर आफरा हो जाता है।

लक्षणः—पशु के बाई और की साइड का पेट फूल जाता है और पेट का आकार बढ़ा हुआ दिखाई देता है, रूमन का गैसों से अधिक फूल जाने के कारण डायफ्राम पर दबाव पड़ता है जिससे पशु को सांस लेने में दिक्कत होती है और पशु मुंह खोलकर जीभ बाहर निकालकर सांस लेता है, पशु बैचेन सुस्त दिखाई देता है ओर बार—बार थोड़ा—थोड़ा गोबर—पेशाब करता है, सही समय पर उपचार नहीं किया जाए तो पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

उपचारः— आफरे का तुरंत इलाज करवाना चाहिए अन्यथा पशु की मृत्यु हो जाती है रोगी पशु का खाना बंद कर देना चाहिए और पशु को ऐसे ढलान वाली जगह पर खड़ा कर देना चाहिए जिसमें पशु के आगे वाला हिस्सा थोड़ा ऊंचा रहे और पीछे वाला हिस्सा थोड़ा नीचे रहे जिससे डायाफ्राम पर रुमन का दबाव थोड़ा कम पड़े और पशु को सांस लेने में दिक्कत ना हो और पशुचिकित्सक से शीघ्र संपर्क करना चाहिए।

- ❖ बलोटोसील 100 एम. एल. दे सकते हैं।
- ❖ तारपीन का तेल 50 से 60 एम.एल. देना चाहिए।
- ❖ सरसों का तेल 100 एम. एल.
- ❖ 50 ग्राम हींग, 20 ग्राम काला नमक, 1 लीटर छाछ में डालकर पिलाएं।
- ❖ पशु को बिना जीभ पकड़े पिलाना चाहिए तारपीन का तेल पिलाते समय पशु को पानी में मिलाकर पिलाना चाहिए।

अम्लीय अपचः—कार्बोहाइड्रेट युक्त पदार्थ अधिक मात्रा में खा लेने पर रूमिनल दृव अर्थात रूमन का वातावरण अम्लीय हो जाता है इसे अम्लीय अपच कहते हैं।

कारणः—कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन जैसे चावल गेहूं, बाजरा, आलू अधिक मात्रा में खा लेने से अमलीय अपच हो जाता है, रसोईघर का बचा हुआ पुलाव बासी रोटी आदि खा लेने पर भी हो सकता है।

लक्षणः— पशु की भूख बंद हो जाती है, आफरा आता है, पेट में पानी भर जाता है, निर्जलीकरण अर्थात पानी की कमी हो जाती है, पेट की गतियां कम हो जाती है तथा शरीर का तापमान कम हो जाता है, कब्ज अथवा दस्त हो सकते हैं,पशु दांत किटकिटाने लगता है।

उपचारः—

- ❖ 12 से 24 घंटे तक पानी नहीं पीने देना चाहिए।
- ❖ सोडियम बाई कार्बोनेट पाउडर 150 से 200 ग्राम मुँह से देना चाहिए।
- ❖ यदि आफरा है तो तारपीन का तेल 50 से 60 एम एल दे सकते हैं।

क्षारीय अपच :—पशु कोई क्षारीय पदार्थ जैसे यूरिया खा जाए तो रूमन का वातावरण क्षारिय हो जाता है इसे क्षारीय अपच कहते हैं।

कारणः— जेर खा जाने पर, यूरिया खा जाने पर, प्रोटीन युक्त आहार अधिक खा लेने पर क्षारीय अपच हो सकती है।

लक्षण :— पशु को भूख नहीं लगना, मुंह से लार गिरना, पेट दर्द होना, चक्कर में दौरे आना, अत्यधिक उत्तेजित हो जाना आफरा आना, मुंह से अमोनिया जैसी बदबू आना।

उपचार :—

- ❖ क्षारीय वातावरण हल्का अम्लीय करना है इसके लिए एसिटिक अम्ल अर्थात सिरका मुंह से देना चाहिए।
- ❖ साथ में ही पशु को मुख से गुड़ अथवा जैगरी अथवा ग्लूकोज देना चाहिए।
- ❖ नींबू का रस देना चाहिए।

आंत्रशोथः— आंत की स्लेष्मा झिल्ली में सूजन आना आंत्रशोथ कहलाता है।

कारणः—सड़ा—गला या मिट्टी का चारा खा लेने पर, आहार अधिक मात्रा में खा लेने पर, जीवाणु अथवा विषाणु के संक्रमण के कारण ईकोलाई, सालमोनेला, पेट में अथवा आंत में कीड़े होने पर, भोजन में अचानक परिवर्तन करने पर, अधिक मात्रा में कोलोस्ट्रम पीने पर

लक्षणः—दस्त अथवा डायरिया होना अर्थात पतला पानी जैसा गोबर करना, कभी—कभी दस्त के साथ खून या म्यूकस भी आता है, गोबर में बदबू आती है, एठन मरोड़े आते हैं, पशु में पानी की कमी आ जाती है और पशु कमजोर हो जाता है खाना पीना बंद कर देता है।

उपचारः—

- ❖ पशुचिकित्सक से संपर्क करके पशु का तुरंत इलाज करवाएं।
- ❖ पतले दस्त होने पर 24 घंटे तक खाना नहीं देना चाहिए।
- ❖ पशुचिकित्सक से बात कर सल्फाडीमीडीन की गोली दे सकते हैं।
- ❖ कर्मी नाशक दवा पशुचिकित्सक की देखरेख में देनी चाहिए।
- ❖ पशु को ओआरएस इलेक्ट्रोलाइट्स का घोल दिन में तीन—चार बार देते रहना चाहिए।
- ❖ पशु को घरेलू उपचार में चारकोल (50 से 200) ग्राम या 40 ग्राम कटेचु पाउडर दे सकते हैं।
- ❖ पशु को फ्लूडथेरेपी भी देनी चाहिए।
- ❖ अरंडी का तेल 500 एम एल मुंह में देना चाहिए।
- ❖ रुमीनोटोरीक्स, बीकांपलेक्स देना चाहिए।

डॉ. विनय कुमार एवं डॉ. प्रमोद कुमार
पशु विज्ञान केंद्र, झुंझुनू

गर्मी के मौसम में पशुओं को बचाएं

रक्त प्रोटोजोआ पशुओं को हानि पहुंचाने वाले वे परजीवी है जो कि मुख्यतया गर्मी व वर्षा ऋतु में अधिक होते हैं, क्योकि उच्च तापमान व उच्च आर्द्रता इन परजीवियों के विकास के लिए सर्वोत्तम वातावरण प्रदान करते हैं। इन परजीवियों के कारण होने वाले रोगों से पालतू पशुओं का दुग्ध उत्पादन घट जाता है तथा उचित उपचार न मिलने की वजह से पशुओं में खून की कमी होकर मृत्यु भी हो जाती है, जिसके कारण पशुपालकों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है अतः इन रक्त परजीवी रोगों के नियत्रंण पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पालतू पशुओं के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले मुख्य रक्त परजीवी रोग बबेसियोसिस और थिलेरियोसिस है।

बबेसियोसिस

पशुओं में होने वाला रोग जो कि रक्त प्रोटोजोआ के संक्रमण से होता है जिसका प्रसार मुख्यतया किलनियों तथा चीचड़ों के द्वारा होता है। गायों व भैंसों को प्रभावित करने वाली बबेसिया की प्रजातियां बबेसिया बोविस, बबेसिया मेजर, बबेसिया बाइजेमिया तथा बबेसिया डाईवरजेन्स है। इस रोग से संक्रमित पशुओं में दुग्ध उत्पादन की कमी, शारीरिक विकास मे कमी, बीमार पशुओं के इलाज की लागत तथा काम करने वाले पशुओं की कार्य क्षमता में कमी के कारण पशुपालकों को भारी आर्थिक नुकसान पहुंचता है।

संक्रमणः ये रक्त प्रोटोजोआ पशुओं के रक्त में चिचड़ियों के माध्यम से प्रवेश कर जाते है तथा वे रक्त में जाकर लाल रक्त कोशिकाओं में अपनी संख्या बढ़ाने लगते है जिसकी वजह से हीमोग्लोबिन पेशाब के साथ शरीर से बाहर निकलने लगता है जिससे पेशाब का रंग लाल या गहरे भूरे रंग का हो जाता है।

लक्षणः

- पशु खाना–पीना छोड देता है तथा दुग्ध उत्पादन में कमी आ जाती है।
- पशु को तेज बुखार आ जाता है।
- खून की कमी, हद्य की धड़कन बढ़ना तथा पीलिया होना।
- मूत्र का लाल/कॉफी कलर होना तथा खूनी दस्त लगना।
- तीव्र अवस्था में शीघ्र इलाज ना मिलने पर 90 प्रतिशत संक्रमित पशुओं की मृत्यु हो जाती है।

निदान व उपचारः

- संक्रमित पशु के लक्षणों के आधार पर उचित उपचार करावें।
- क्षेत्र में किलनियों अथवा चिचड़ो के प्रसार को रोकने के बारे में जानकारी देवें।
- अस्वस्थ पशुओं के रक्त की जांच करावें।
- पशुचिकित्सक की सलाह से डाईमिनेजीन एसीट्यूरेट ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन एंटीबायोटिक तथा खून बढ़ाने वाली दवाई लगवानी चाहिए।

थिलेरियोसिस

यह रक्त परजीवी रोग मुख्यतयाः विदेशी व संकर नस्ल के गौवंशी पशुओं में थिलेरिया एनुलेटा नामक प्रोटोजोआ से होता है जिसका संक्रमण विशेष प्रकार की किलनी हायलोमा एनुटोलिकम के काटने से फैलता है।

संक्रमणः जब कोई किलनी किसी रोगग्रस्त पशु का रक्त चूसती है तो ये परजीवी किलनी के शरीर में आ जाते है जहां इनकी संख्या में वृद्वि होती है तथा जब वही किलनी किसी स्वस्थ पशु का खून चूसती है तो लार के माध्यम से यह परजीवी उस पशु के खून में आ जाते है तथा पशु रोगग्रस्त हो जाता है।

लक्षणः

- संक्रमित पशु में तीव्र बुखार व सतही लसिका ग्रंथियों में सूजन पाई जाती है।
- नाक से स्त्राव, तीव्र हद्य गति, रक्त अल्पता, कब्ज व दस्त हो जाती है।
- इलाज के अभाव में 2–3 सप्ताह में ही 70 प्रतिशत पशुओं की मृत्यु हो जाती है।

निदान व उपचारः

- पशुचिकित्सक की सलाह से बूपारवाकेन का टीका लगवाना चाहिए।
- इस रोग की रोकथाम के लिए ''रक्षावैक टी'' नामक टीका बेहद कारगर है, यह टीका पशुओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।
- किलनी की रोकथाम के लिए पशु बाड़े में कीटनाशक स्प्रे करावें तथा बाड़े की साफ–सफाई का उचित ध्यान रखें।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

उन्नत नस्ल एवं आधुनिक तकनीकों को अपना कर बदल दी अपने जीवन की तस्वीर

उन्नत नस्ल अपनाकर आर्थिक रूप से सुदृढ़ हुए प्रगतिशील पशुपालक श्री जगदीश सिंह, झुंझुनूं जिले के तहसील गुढ़ा के गांव सिंगनोर निवासी कृषि के साथ–साथ पशुपालन व्यवसाय को सीमित स्तर पर पिछले 10 वर्षो से करते आ रहे हैं। ये पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा आयोजित विभिन्न पशुपालन प्रशिक्षण शिविरों में समय–समय पर भाग लेते रहते हैं। केन्द्र द्वारा पशुपालन से सम्बन्धित दी जाने वाली जानकारियों को अपनाते हुए गत दो वर्ष पूर्व उन्नत नस्ल के पशुओं को पशु शाला में शामिल करने की इच्छा जागृत हुई। स्नातक स्तर तक शिक्षित होने के बावजूद भी उनकी रूचि सदैव पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाने की थी। वर्तमान में इसको यथार्थ के धरातल पर स्थापित कर पशुपालन को एक सफल व्यवसाय के रूप में आगे बढ़ा रहे है। जगदीश सिंह के पास मुर्रा नस्ल की 4 भैंसे और 3 गायें हैं साथ ही 35 उन्नत नस्ल की बकरियां भी है। इन पशुओं से प्रतिदिन लगभग 50 लीटर दूध उत्पादन होता है एवं उत्पादित दूध को निकट के संकलन केन्द्र पर बेच देते हैं तथा उन्नत नस्ल के बकरे तैयार कर इनकी बिक्री करके अच्छा मुनाफा कमा लेते है। एक सफल पशुपालक के साथ–साथ अपने आसपास के क्षेत्र के गांवों में भी लोगों से काफी पहचान बना ली है जिसके कारण आसपास के गांव के किसानों एवं पशुपालकों को पशुपालन से सम्बन्धित जानकारी के लिए पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं से संपर्क करने की सलाह देते है। पशुओं के लिए चारे की पूर्ति अपने स्वंय के खेत से हो जाती है इनके पास चारा काटने की मशीन भी है। जगदीश सिंह अपने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को अधिक महत्व देते हैं। पशुओं का प्राथमिक उपचार पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं के वैज्ञानिको एवं पशुचिकित्सकों की सलाह से स्वंय कर लेते हैं एवं आवश्यक होने पर पशुचिकित्सक की भी सेवाएं लेते हैं। अपने पशुओं के लिए संतुलित पशुआहार, कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण की उपयोगिता, टीकाकरण, पशुओं में नस्ल सुधार द्वारा दूध उत्पादन में वृद्वि, मोलासेस मिनरल ब्लॉक आदि की जानकारी सांझा करते हैं। इनकी पशुपालन से वार्षिक आय लगभग 6.00 लाख रू. तक हो जाती है। निकट भविष्य में सिरोही नस्ल का बकरी फार्म शुरू करने की सोच रखाते हुए पशुपालन व्यवसाय को ओर भी वृहद स्तर पर करना चाहते है। जगदीश सिंह अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के सदस्यो के साथ–साथ पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं को देते है।

सम्पर्क– जगदीश सिंह
गांव सिगनोर, तहसील गुढ़ा, जिला झुंझुनूं (8890410934)

निदेशक की कलम से...

संतुलित पशु आहार–पशुपालन का आधार

पशुओं के उत्तम स्वास्थ्य तथा अधिक दूध उत्पादन के लिए संतुलित पशु आहार अति आवश्यक है। संतुलित आहार चारे व दाने का वह मिश्रण है जिसमें पशु के लिए सभी आवश्यक पोषक तत्व उचित मात्रा एवं सही अनुपात में मौजूद होते हैं। संतुलित आहार पशु के शरीर को बनाये रखने, उचित बढ़ोतरी व दूध उत्पादन के लिए कई तरह के खाद्य पदार्थों को मिलाकर बनाया जाता है। जिसे 24 घंटे में पशुओं को खिलाया जाता है। इसे सभी आवश्यक पौषक तत्व जैसे उर्जा, प्रोटीन, खनिज, विटामिन आदि उचित मात्रा में मिलाकर बनाया जाता है। लाभकारी पशुपालन हेतु संतुलित आहार की पूर्ति के लिए पशुपालकों को ऐसे खाद्य पदार्थ जो सस्ते दामों पर आसानी से उपलब्ध हो, जैसे सूखी घास, तुड़ी, कडवी, दलहरी चारे एवं आवश्यकतानुसार दानों का मिश्रण जैसे– मक्का, जौ, ज्वार, चूरी, खल आदि का प्रयोग करना चाहिए। दाना मिश्रण में दो प्रतिशत खनिज लवण व एक प्रतिशत नमक आवश्यक रूप से मिलाना चाहिए। दाना मिश्रण खिलाने से पहले कुछ घंटे पानी में भिगोना चाहिए। पशुपालक हमेशा याद रखे कि संतुलित आहार स्थानीय रूप से उपलब्ध घटकों को मिलाकर ही तैयार करना चाहिए। तथा पशु को आहार की मात्रा उनके शरीर के भार अर्थात 2.5 किलो से 3 किलो आहार प्रति 100 किलो भार के अनुसार ही देनी चाहिए। संकर नस्ल की गायों का शारीरिक भार अधिक होता है अतः उन्हें उनके भार के अनुसार ही संतुलित आहार देना चाहिए। पशुओं में आहार की मात्रा उसकी उत्पादकता तथा प्रजनन की अवस्था पर निर्भर करती है। पशु को कुल आहार का 2/3 भाग मोटे चारे से तथा 1/3 भाग दाना मिश्रण मिलाकर पूर्ति करनी चाहिए। संतुलित पशु आहार बनाते समय पशुपालक ध्यान रखे कि आहार रूचिकर होना चाहिए। आहार पेट भरने की क्षमता रखे तथा सस्ता, गुणकारी, उत्पादक बदबु व फफूंद रहित होना चाहिए। पशुपालक यह भी ध्यान रखे कि दाना बारीक पीसा हुआ भी नहीं होना चाहिए इसे दलिया बनाकर पशु को खिलावें। पशुपालक को पशु के चारे व दाने में अचानक बदलाव नही करना चाहिए। चारे व दाने में धीरे–धीरे बदलाव लायें ताकि पशु की भोजन प्रणाली पर कुप्रभाव ना पड़े तथा चारा खिलाने की नांद पूर्णतः स्वच्छ होनी चाहिए उसमें नया चारा अथवा दाना मिश्रण डालने से पहले बचा हुआ चारा व दाने को बाहर निकाल देना चाहिए। यदि पशुपालक भाई अपने पशुओं को संतुलित आहार एवं वैज्ञानिक तरीके से चारा व दाना खिलायें तो पशु स्वस्थ व निरोग रहेगें तथा दूध उत्पादन भी बढ़ेगा जिससे पशुपालक भाई अधिक से अधिक लाभ अर्जित कर सकेगें।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया